C-4- Language Across the Curriculum

* पठन शिक्षा का महत्व !—

वर्तमान युग में पठन शिक्षा का महत्व बहुत बढ़ गया है। आज वैचारिक आदान-प्रदान, विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करने एवं विश्व भर की जानकारी तथा छात्रों के संवेगात्मक तथा मानसिक विकास की दृष्टि से पठन कौशल का विकास अनिवार्य हो गया है। इसके अभाव में लेखन, वाचन एवं बोध सामर्थ्य का विकास असम्भव है।

अतः शिक्षकों को बालकों में पठन-कौशल में प्रवीण बनाने का प्रयास करना चाहिए।

* पठन कौशल के प्रकार !—

पठन के मुख्यतः दो प्रकार होते हैं !—

(i) सस्वर पठन

(ii) मौन पठन

सस्वर पठन (Loud Reading) — सस्वर पठन से आशय लिखित भाषा में व्यक्त भावों तथा विचारों को समझने हेतु ध्वन्यात्म उच्चारण करके पढ़ने से है। इसे मौखिक पठन भी कहा जाता है। मौखिक पठन का उद्देश्य बालकों को ध्वनियों के उचित आरोह-अवरोह एवं विराम चिन्हों आदि को दृष्टिगत रखकर उचित स्वर, यति गति एवं लय के साथ पाठ्य-वस्तु का अर्थ एवं भाव ग्रहण करते हुए शुद्ध अत्यधिक पढ़ने की योग्यता प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

सस्वर वाचन करने से छात्रों का शब्दोच्चारण एवं अक्षर-विन्यास शुद्ध होता है। नवीन शब्दों में सूक्तियों, लोकोक्तियों तथा मुहावरों का परिचय प्राप्त करके शब्द भण्डार समृद्ध होता है। छात्रों को स्वराघात तथा बलाघात का समुचित ज्ञान होता है और छात्र भाषण एवं वाद-विवाद कला में निपुणता अर्जित कर लेते हैं।

* सस्वर वाचन के उद्देश्य :—

सस्वर वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :—

1. सस्वर वाचन का मुख्य उद्देश्य वार्तालाप में तथा पठन में होने वाली रुकावट को दूर करना भी है।

2. सस्वर वाचन का एक और मुख्य उद्देश्य छात्रों के उच्चारण में सुधार लाना है। बालकों के उच्चारण में होने वाली विराम, बलाघात सम्बन्धी भूलों को धीरे-धीरे कम करना है।

3. सस्वर वाचन का उद्देश्य ~~वार्तालाप~~ शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना है।

4. सस्वर वाचन का एक उद्देश्य विरामादि चिन्हों का समुचित ध्यान रखते हुए पढ़ना भी है।

5. भावानुरूप अवसर के अनुरूप गुण भी इसका उद्देश्य है।

6. इसका एक उद्देश्य उच्चारण एवं सुर में स्थानीय बोलियों का प्रभाव न आने देना है।

7. इसका एक उद्देश्य श्रोताओं की संख्या तथा अवसर के अनुसार वाणी को नियन्त्रित करना भी है।

Scanned with CamScanner

* उत्तम सस्वर वाचन के गुण :—

उत्तम सस्वर वाचन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सतत प्रयासों की आवश्यकता है। यदि वे उद्देश्य प्राप्त हो जाते हैं तो वाचन 'अच्छा' कहा जाएगा। उत्तम वाचन के लिए निम्नलिखीत गुण आवश्यक हैं :—

1. ध्वनियों का ज्ञान
2. उपयुक्त बलाघात
3. उच्चारण की शुद्धता
4. स्पष्टता
5. विराम चिन्ह
6. प्रवाह
7. रुचि
8. वाचन की मुद्रा
9. स्वर में रसात्मकता
10. अर्थ की प्रतति

सस्वर वाचन के भेद :—

सस्वर वाचन के दो भेद किये जा सकते हैं :—

(i) आदर्श वाचन

(ii) अनुकरण वाचन

Scanned with CamScanner

* आदर्श वाचन के उद्देश्य :—
आदर्श वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :—

1. छात्रों के समक्ष वाचन का एक मानदण्ड उपस्थित करना।
2. छात्रों को यह समझाना कि उन्हें कहाँ तक पढ़ना है।
3. अपरिचित पाठ्य - सामग्री का छात्रों को प्रथम परिचय देना।
4. छात्रों के मन में व्याप्त झिझक को दूर करना।
5. छात्रों को उचित गति, लय, विराम, उच्चारण, स्पष्टता आदि का ध्यान रखते हुए वाचन करने की प्रेरणा देना।

* अनुकरण वाचन :—
आदर्श वाचन के बाद छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन किया जाता है। जब छात्र शिक्षक द्वारा किये गये वाचन के ढंग पर वाचन करने का प्रयत्न करते हैं तो उसे अनुकरण वाचन कहा जाता है।

* अनुकरण वाचन के उद्देश्य :—
अनुकरण वाचन के निम्नलिखीत उद्देश्य हैं :—

(i) शिक्षक द्वारा किये गये आदर्श वाचन का अनुकरण करना।
(ii) उच्चारण को शुद्ध बनाना।
(iii) पाठ के भाव के अनुसार वाचन करने की क्षमता प्राप्त करना, यथा दुःख में भारी आवाज से, वीर रस की सामग्री में उच्च स्वर से, शृंगार में स्नेहयुक्त

Scanned with CamScanner

मधुर स्वर हो, करुण रस में द्रवार्द्र स्वर से तथा भक्ति रस में शान्त तथा गम्भीर स्वर में वाचन करने की योग्यता प्राप्त करना।

(iv) वाचन में गति तथा प्रवाह का ध्यान रखना।

(v) वाचन करते समय अर्थग्रहण की योग्यता का विकास करना।

2. मौन पठन (Silent Reading)

:- लिखित सामग्री को मन ही मन बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन पठन अथवा वाचन कहलाता है। मौन वाचन के होंठ बन्द रहते हैं। जब छात्र मौन वाचन में कुशलता अर्जित कर लेता है तब सस्वर वाचन का अधिक प्रयोग करना छोड़ देता है। मौन वाचन में निपुणता का आना व्यक्ति के विचारों की प्रौढ़ता का द्योतक होता है एवं भाषायी दक्षता अधिकार का सूचक है।

मौन वाचन के उद्देश्य :- मौन वाचन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

(i) मौन वाचन छात्रों में चिन्तनशीलता का विकास करता है जिससे उनकी कल्पना-शक्ति विकसित होती है और छात्र बुद्धिमान बनता है।

(ii) मौन वाचन छात्रों को भाषा के लिखित रूप को समझकर गहराई तक पहुँचाने में सहायता करता है।

(iii) मौन वाचन द्वारा एकाकी क्षणों

में समय का सदुपयोग किया जा सकता है।

(iv) शिक्षार्थियों में चिन्तन तथा तर्क शक्ति को बढ़ाने एवं उनके प्रति उदार क्षमता उत्पन्न करने के लिए भी इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

(v) मौन पठन में छात्र की कल्पना शक्ति का विकास होता है, शान्त मस्तिष्क में छात्र आगे की घटनाओं के विषय में अनुमान लगा सकता है।

(vi) सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि छात्र कम से कम समय में विषय को गहराई से समझ लेता है और अत्यधिक आनन्दानुभूति अर्जित करने में सफल होता है।

(vii) मौन पठन छात्र को स्वाध्याय हेतु प्रेरित करता है और स्वाध्याय की ओर प्रेरित होकर वह साहित्य में रुचि लेने लगता है।

(viii) मौन पठन में अन्य संगी साथियों को कोई परेशानी नहीं होती है।

(ix) मौन पठन में अकेलेपन की बोझिलता बहुत कम हो जाती है।

(x) सस्वर पठन जितना प्राथमिक कक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है, मौन वाचन उतना ही उच्च कक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

Scanned with CamScanner